भावपूर्ण
कविताओं का
अभूतपूर्व संग्रह

जन्म-मरण के बन्धन से
उस दिन मुक्ति देना ईश्वर!
पर-नयनों के अश्रु से
जिस दिन द्रवित न होने पाऊं

भाव सुमन

एक आधुनिक काव्यसुधा सरस

वागीश अपरिचित

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए
जब भी मैं धरा पर आऊं

भाव सुमन

एक आधुनिक काव्यसुधा सरस

लेखक: वागीश अपरिचित

पुस्तिका परिचय

इस लघु पुस्तिका में हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को सुन्दर, स्मरणीय, और कर्णप्रिय कविताओं के रूप में छुआ गया है। ये कवितायेँ बहुआयामी हैं। प्रत्येक कविता अनेक प्रकार के विषयों को एकसाथ छूती है। कविता हमारे अवचेतन मन तक आसानी से पहुँच बना लेती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि "जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि"। बहुत सी पुस्तकों को पढ़ने से भी जो बात मन-स्वभाव में न बैठे, वह मात्र एक कविता के पठन-चिंतन से आसानी से बैठ सकती है। इस पुस्तिका की सभी कविताएँ स्मरण करने योग्य हैं। इन्हें गाया भी जा सकता है। हरेक कविता भाव व अनुभव से भरी हुई है। इन कविताओं को सजावट के तौर पर भी विभिन्न स्थानों पर लगाया जा सकता है। पॉकेट बुक के रूप में इन्हें हमेशा अपने साथ भी रखा जा सकता है , ताकि इनकी चेतनामयी शक्ति किसी तंत्रमंडल की तरह हर समय लाभ प्रदान करती रहे। बहुत न लिखते हुए इसी आशा के साथ विराम लगाता हूँ कि प्रस्तुत कविता-संग्रह कविता-प्रेमी पाठकों की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा।

कवि विनोद शर्मा एक हरफनमौला व्यक्ति हैं, और साथ में एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी भी हैं। इन्होंने इस पुस्तिका के लेखक को कविता से सम्बंधित बहुत सी तकनीकी जानकारियां प्रदान की हैं। ये हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला में अध्यापन के क्षेत्र से जुड़े हैं। सोलन पहाड़ों का प्रवेष-द्वार भी कहलाता है। यह हिमालयी उतुंग शिखरों को आधुनिक रूप से विकसित मैदानी भूभागों से जोड़ता है। विनोद भाई कला, संगीत व साहित्य के क्षेत्रों में बहुत रुचि रखते हैं। रंग-बिरंगी कविताएँ तो इनके दिल की आवाज की तरह हैं, जो बरबस ही इनके मुख से निस्सृत होती रहती हैं। ये सोलन जिला के एक छोटे से हिमशिखराँचलशायी गाँव से सम्बन्ध रखते हैं। इनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ही अध्यापन के क्षेत्र से जुड़ी हुई है। इनकी कविताएँ वास्तविकता का परिचय करवाते हुए अनायास ही दिल को छूने वाली होती हैं। आशा है कि ये भविष्य में भी अपने देहजगत के अमृतकुंड से झरने वाले कवितामृत से अंधी भौतिकता के जहर से अल्पप्राण मरूभूमि को सिंचित करते रहेंगे।

©2021 वागीश अपरिचित। सर्वाधिकार सुरक्षित।

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)

इस काव्य सम्बंधित पुस्तिका को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

अटल जी को श्रद्धा सुमन

उठ जाग होनहार,
प्रकाश हो या अंधकार।

बाँध तरकस पीठ पर,
भर तीर में फुंकार।।

झुका दे शीश दोनों का,
कर ना पाए फिर कभी भी वार।

उठ जाग होनहार,
प्रकाश हो या अंधकार।।

प्रेमयोगी वज्र विरचित

ये काल का प्रहार है

काल का प्रहार

आकाश अश्रु रो रहा
सृष्टि के पाप धो रहा

धरा मिलनकी इच्छासे
पर्वत भी धीरज खो रहा

चारों दिशा अवरुद्ध है
जल धाराएँ क्रुद्ध हैं

नर कंकाल बह रहे
हकीकत बयान कर रहे

कुदरत की गहरी मार है
ये काल का प्रहार है।

रिश्तों में अपनापन नहीं
बच्चों में भोलापन नहीं

शीतल रुधिर शिराओं में
धीरज नहीं युवाओं में

वाणी मधु से रिक्त है
हरएक स्वार्थ सिक्त है

अविश्वास से भरा हुआ
हर शख्स है डरा हुआ

इन्सानियत की हार है
ये काल का प्रहार है।

दहक रही भीषण अग्न
झुलस रहा है बाग-वन

सूरज के रक्त नयन से
बरस रहे अंगार हैं

गुलों में वो महक नहीं
परिंदों की वो चहक नहीं

ठूंठ बन गए तरू
भूखंड हो गए मरू

आबोहवा बेज़ार है
ये काल का प्रहार है।

जागृति के नाम पर
विलुप्त शिष्टाचार है

सभ्यता ठगी खड़ी
सुषुप्त संस्कार है

श्रेष्ठता के ढोंग का
ओढ़े हुए नक़ाब है

कर्तव्य बोध शून्य है
अधिकारों का हिसाब है

निश्छलता तार-तार है
ये काल का प्रहार है।

शब्दों से कैसे खेलूं मैं

शब्दों से कैसे खेलूं मैं

अन्तर में भावों की ज्वाला
धधक-धधक सी उठती है।

असह्य अखण्डित दाह-वेदना
जिह्वा पर मेरे ठिठकती है।

प्राकट्य जटिल सा हो जाता है
बस भीतर -भीतर झेलूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

इस जगती में हर श्वास की
परिमित एक कड़ी होती है।

हृदय निकट गहन रिश्तों की
चिन्ता -व्यथा बड़ी होती है।

धीर धरूं क्यों?मन करता है
सबकी पीड़ा ले लूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

कोकिल की मीठी स्वर लहरी में
झींगुर की झिन-झिन दोपहरी में

मस्त मयूरों के नृत्यों में
गुंजित भवरों के कृत्यों में

प्रच्छन्न सरस जीवन-पय घट से
मधु वंचित प्याले भर लूं मैं।

अब तू ही बता हमदर्द मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

काल सरित की अविरल धारा
अबल-सबल हर कोई हारा।

मूर्ख है जो धारा संग उलझे
लहरें ऐसी जो न सुलझे।

अब तक कोई पार न पाया
कैसे वेग को ठेलूं मैं?

अब तू ही बता प्रियबन्धु मेरे!
शब्दों से कैसे खेलूं मैं?

दिल के इस मयखाने में जज़्बात ये साक़ी बनते हैं

दिल के इस मयखाने में जज़्बात ये साक़ी बनते हैं
आँखों के पैमाने से फिर दर्द के जाम छलकते हैं।

तेरी रहमतों की बारिश का इन्तज़ार मुझको

तेरी रहमतों की बारिश का इन्तज़ार मुझको
उम्मीद के ये बादल घिरने लगे हैं फिर से ।

जो ज़ख़्म अब से पहले नासूर बन गए थे
रिस्ते हुए ज़ख़्म वो भरने लगे हैं फिर से।

भीड़ न बनो जुदा हों भीड़ से खड़े

भीड़ न बनो जुदा हों भीड़ से खड़े,
जिधर भी तुम चलो काफ़िला साथ चल पड़े।

है ज़िन्दगी की राह मुश्किलात से भरी,
ये रास्ते न होंगे हीरे-मोती से जड़े।

भीड़ न बनो.....

मेहनत से ही मिलेगा मुक़द्दर में जो लिखा,
नहीं मिलेंगे स्वर्ण-कलश खेत में गढ़े।

भीड़ न बनो.....

पढ़े लिखों का दौर यही शोर चारों ओर,
इन्सां वही है जो दिलों के ज़ज्बों को पढ़े।

भीड़ न बनो.....

हर लम्हा है बदलाव ये मन्ज़ूर तुम करो,
तोड़ रूढ़ियों की बन्दिशें आगे चलो बढ़े।

भीड़ न बनो.....

ज़हनी संगीनें तन चुकी हैं होश में आओ,
जिस्मानी जंग छोड़ के हम खुद से ही लड़ें।

भीड़ न बनो.....

मतलबी हर शख़्स यहाँ घात में बैठा,
मालूम नहीं किस ग़रज़ से शानों पे चढ़े।

भीड़ न बनो.....

करता है वो इन्साफ बिना भेदभाव के,
अपनी कमी का दोष हम किसी पे क्यों मढ़ें।

भीड़ न बनो.....

लियाक़त नहीं मोहताज किसी धन की दोस्तो!
खिलते हैं वे कमल भी जो कीचड़ में हों पड़े।

भीड़ न बनो…..।

दो अश्क

बैठ कहीं सुनसान जगह पर
ख़ुदग़रज़ी के इस आलम से

माज़ी के गुज़रे लम्हों में
कुछ देर मैं खोना चाहता हूँ

दो अश्क बहाना चाहता हूँ।

जाड़े की ठण्डी सुबह में
ठिठुरते हुए बाहों को बांधे

प्राची से उगते सूरज को
बेसब्री से तकना चाहता हूँ

दो अश्क बहाना चाहता हूँ।

पशु चराने दादी के संग
सुनसान सघन जंगल के भीतर

सर रखकर उनकी गोदी में
वही कथा मैं सुनना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

सुबह सबेरे खेत जोतते
पिता के पद-चिह्नों के पीछे

'चल' 'हट' कर उन बैलों को
सही दिशा दिखाना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

व्यर्थ उलझकर भाई-बहन से
सच्चे-झूठे आँसू लेकर

स्नेह भरे माँ के आँचल में
वो दुलार मैं पाना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

शहर गए बाबा के संग
भीड़ भरी सड़क पर उनकी

विश्वास भरी उँगली को थामे
उस भीड़ में खोना चाहता हूँ

दो अश्क————————।

कोई बड़ी शरारत हो जाने पर
सहमे हुए घबराए मन से

घास गई उस माँ की मैं
वही बाट जोहना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

बिना बताए माँ-बाबा जब
आँखों से ओझल हो जाते

घर आने पर कहीं दुबककर
मैं उनसे रूठना चाहता हूँ

दो अश्क————————-।

मासूम बचपना कहीं छोड़कर
हरपल मरता है शख़्स यहाँ

इतराता अपने जन्म दिवस पर
क्यों? यही जानना चाहता हूँ

दो अश्क————————।

परवाज़ रहता है क्यों इतना उत्सुक

परवाज़
रहता है क्यों इतना उत्सुक
तारीख़ नई लिखने को हरदम।

एक नए रिश्ते की ख़ातिर
अपना ही लहराए परचम।

उसको ही सर्वस्व मानकर
सबसे करे किनारा है।

काट स्वयं जड़ों को अपनी
ढूंढे नया सहारा है।

याद नहीं बिल्कुल भी उसको
बचपन में खेल जो खेले थे।

एहसास नहीं ज़रा भी उसको
माँ-बाप ने जो दु:ख झेले थे।

मिलकर भाई-बहन कभी
तितली के पीछे भागे थे

नई सुबह के इन्तज़ार में
रात-रात भर जागे थे।

एक-दूसरे के दु:ख-सुख से
जब एक साथ रो पड़ते थे।

मिलते ही एक नई ख़ुशी
तब फूल हंसी के झड़ते थे।

छोटे-छोटे कदमों से हम
धूल उड़ाया करते थे।

गाँव की पगडण्डी से
जब पढ़ने जाया करते थे।

उस वक़्त हमें मालूम नहीं था
वक़्त भी क्या दिखलाएगा।

दोस्त-भाई गाँव छोड़कर
शहरों का हो जाएगा।

भाग रहा है धन के पीछे
भूल के पिछली बातों को।

आ जाती जब याद कभी तो
तन्हा रोता रातों को।

छोड़ के अपनी जन्मस्थली
ढूंढे है प्यार परायों में।

त्याग मुसाफिर घर को अपने
ज्यों रात बिताए सरायों में।

खेत पड़े हैं बंजर सारे
माँ-बाप की आँखें सूखी हैं।

ताक रही रस्ता बेटे का
बस उसके दरस की भूखी हैं।

आई घर की याद उसे
बदला जब सारा परिवेश।

इतिहास दोहराया ज़माने ने
बच्चे भी उड़ गए परदेस।

पंछी भी उड़कर रातों को
आ जाते हैं नीढ़ में

पर खोया रहा तू क्यों बरसों तक
इन नगरों की भीड़ में?

छोड़ जवानी शहरों में
बूढ़ा लौटे गाँव को।

वृक्ष नहीं जो बचे हुए हैं
ढूंढे उनकी छाँव को।

जैसा बोया वैसा काटा
बचा नहीं अब कुछ भी शेष।

झुकी कमर से लाठी टेके
खोजे गत जीवन अवशेष।

यन्त्र बना है मानव अब तो
बलि चढ़ा जज़्बातों की।

कभी नहीं करता तहलील
उत्पन्न हुए हालातों की।

कट के अपनी डोर से
पतंग कोई उड़ न पाए।

परवाज़ भरी थी जिस ज़मीन से
उसी ज़मीन पे गिर जाए।

ऐ ज़िन्दगी ! तू बेहद खूबसूरत है।

ऐ ज़िन्दगी ! तू बेहद खूबसूरत है।
तेरा हर नाज़ो नख़रा सह लेते हैं।

रुलाए तू हंसाए तू,
नश्तर चुभा,सहलाए तू।

तेरी लौ की तपिश में परवाने बन जल जाते हैं,
कुर्बान हुए जाते हैं ।

ऐ ज़िन्दगी!....

मयस्सर हुई तू बहुत खुशनसीबी से
नहीं कोई ताल्लुक अमीरी-ग़रीबी से

तड़पाए तू,लहराए तू।
सपने दिखा,तरसाए तू।

तेरी रौ की कशिश में
तिनके बन बह जाते हैं,भँवर में फंस जाते हैं।

ऐ ज़िन्दगी!.....

तमाशाई हैं सब अजब तेरी रियासत के
नहीं कोई मालिक तेरी इस विरासत के

ललचाए तू,भरमाए तू,
दिल से लगा,ठुकराए तू।

तेरी हवा की जुम्बिश से
पत्ते बन उड़ जाते हैं,ख़ाक में मिल जाते हैं।

ऐ ज़िन्दगी!

फिर से तेरी रहमतों की बारिश का इंतज़ार मुझको

फिर से
तेरी रहमतों की बारिश का इंतज़ार मुझको
उम्मीद के ये बादल घिरने लगे हैं फिर से।

जो ज़ख़्म अब से पहले नासूर बन गए थे
रिस्ते हुए ज़ख़्म वो भरने लगे हैं फिर से।

सफर में ज़िन्दगी के थी धूप चिलचिलाती
झुलसे हुए पैरों से थी चाल डगमगाती।

तपती हुई ज़मीं पर चलते हुए अचानक
दरख़्तों की घनी छाया आने लगी है फिर से।

ख़ौफ़ से भरा था इन्सानियत का मंज़र
ख़ून से सना था हैवानियत का ख़ंज़र।

फैली हुई थी हरसु दहशत की धुन्ध गहरी
हिम्मत की हवा से वो छटने लगी है फिर से।

अन्धेरों में भटकता था वो राह से अन्जाना
शम्मा को तड़पता है जैसे कोई परवाना।

काली अन्धेरी रातें जो राह रोकती थी
जुगनू के कारवां से रोशन हुई हैं फिर से।

काली घटा ने घिर के ऐलान कर दिया है
सागर का पानी उसने जी भर के पी लिया है।

हर शाख़ पत्ते पत्ते पे लगी बौछारें गिरने
कुदरत के ज़र्रे-ज़र्रे में छाया ख़ुमार फिर से।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए

शुष्क कण्ठ की बनूं तरलता
जटिल भूमि की बनूं सरलता

उमड़-घुमड़ कर नभ पर छाए
उस बादल का जल बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

वीरों के माथे का चन्दन
जग करता है जिसका वन्दन

प्रस्फुटित हुआ है अंकुर जिसमें
उस माटी का कण बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

सुमन-सौरभ को बिखराता
संतप्त हृदय को हर्षाता

जो दग्ध वपु को कर दे शीतल
वो समीर झोंका बन जाऊँ।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

सुलगाए साहस की ज्वाला
झुलसाए आतंक का जाला

बुझी आशा का दीप जलाए
वो अग्नि-स्फुलिंग बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

उज्ज्वल चन्द्र-सितारों वाला
पर्वत की दीवारों वाला

जिसके नीचे जीव सृजन हो
उस नभ का हिस्सा बन जाऊं।

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए
जब भी मैं धरा पर आऊं।

जन्म-मरण के बन्धन से
उस दिन मुक्ति देना ईश्वर!

पर-नयनों के अश्रु से
जिस दिन द्रवित न होने पाऊं

मोक्ष नहीं मुझे लक्ष्य चाहिए,
जब भी मैं धरा पर आऊं।

हकीकत में जिंदगी तो काँटों ने संवार दी

चाहत में हमने गुल की
उम्रें गुज़ार दी।

हकीक़त में ज़िन्दगी तो
कांटों ने संवार दी।

इल्ज़ाम क्यों दें वक्त को
हम चल न पाए साथ।

इसने दी गर ख़िज़ा तो
किसने बहार दी?

सब बन बैठे नाव खवैया

हवा चली ये कैसी भैया
कूद पड़े सब एक ही नैया

पता नहीं, पतवार चीज़ क्या?
सब बन बैठे नाव खवैया।

लय और ताल समझ न आई
नाच पड़े सब ता-ता थैया

आँख मूंद सब दौड़ लगाए
मन्ज़िल सबकी भूल-भूलैया।

पल में क्या हो? खबर नहीं है
सबका एक ही नाच नचैया।

स्वयं की तू तलाश कर

क्षणिक सुखों की चाह में
भटक रहा इधर-उधर

कस्तूरी की खुशबू के लिए
हिरण की तरह बेख़बर

वज़ूद क्या तू कौन है?
इतनी-सी पहचान कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू पहचान कर।

राह में बिखरे हुए
कांटे भी चुन लें कभी

रोते हुए इन्सान का
दर्द भी सुन ले कभी

क्या तू मुंह दिखाएगा
जाएगा जब उसके घर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

मर गया है कौन ये
पास जा के देख ले

ज़ुल्म क्या इस पर हुआ
चिन्तन में चिता सेंक लें

आवाज़ उठा अर्श तक
किसका तुझे इतना डर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

बस्ती में खुदग़र्जों की
निराश होना छोड़ दें

कर दे बुलन्द हस्ती को
हवाओं का रुख मोड़ दे

गुज़रेगा जिन राहों से
लोग झुकाएंगे सर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

शान्ति-ध्वज को छोड़ दें
शमशीर उठा तन के चल

मसीहा बन कमज़ोर का
पड़ने दें माथे पे बल

आग़ाज़ कर जीवन का तू
अन्जाम की फ़िक्र न कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

सांसें मिली संसार में
मक़सद कोई ज़रूर है

शाख़ पर पत्ता भी वरना
हिलता नहीं हुज़ूर है

लगा दे यहाँ हाज़िरी
दिन-रात अपना कर्म कर

हृदय में अपने झांक ले
स्वयं की तू तलाश कर।

तरकश में अभी कई बाण पड़े हैं

हंसा कौन ये दूर गगन में
क्या सुन पाए तुम भी यारो

मौन व्याप्त है चहुं दिशा में
अब तो सम्भलो अहम के मारो

अति का बुरा सर्वत्र सुना था
आज घटित हुए देख लिया है

फिसला जब जीवन मुट्ठी से
फिर तुमने उसे याद किया है।

जीवनदायी धरा पर तुमको
जीना रास नहीं आया है

जीवन सम्भव नहीं जहां था
वो मंगल-चाँद तुम्हें भाया है

प्रकृति विरुद्ध जो काम किए हैं
उसका दण्ड तो पाना होगा

तुमने सोचा शाश्वत हैं हम
अब समय से पूर्व जाना होगा।

भूमि,नभ,जल,वायु,अग्नि
पंच तत्वों को भी न छोड़ा

विधि निर्मित जो नियम बने थे
उन नियमों का पालन तोड़ा

विज्ञान नहीं भगवान से ऊपर
इतना अगर तुम जाने होते

आज नहीं अपने कन्धो पर
मानवता की लाशें ढोते।

प्रमाद भरा है कैसा तुम में
दानवता तुमसे हारी है

भक्ष लिया हर जीव जगत का
अब सोचो किसकी बारी है

शर्मसार है जगत नियन्ता
महसूस हुई लाचारी है

सख्त फैसला अब वो लेगा
सृष्टि की ज़िम्मेदारी है।

अभी तो ये आरम्भ हुआ है
क्यों इतने बेचैन हो रहे

समय है ये कर्मों के फल का
वर्षों से जिसका बीज बो रहे

किसके मद में उन्मत थे तुम
अब शीश झुकाए मौन खड़े हैं

एक ही तीर चलाया उसने
तरकश में अभी कई बाण पड़े हैं।

मानव जीवन के विरोधाभास पर छोटी सी गजल

जब से कसम ली उसने शराफ़त से जीने की
पैमाईश लगे अब करने बुज़दिल भी सीने की।

हिक़ारत से देखते थे जो मयख़ानों की तरफ़
आदत उन्हें अब हो गई हर रोज़ पीने की।

फ़ितरत में जिनकी डूबना बचाए उन्हें कौन
समन्दर में ज़रूरत नहीं उनको सफ़ीने की।

नहीं वास्ता मेहनत से जिनका दूर तलक यार
करते नहीं इज्ज़त वो किसी के पसीने की।

इकट्ठा किए रहे जो कौड़ियों को अपने पास
कीमत क्या जाने नासमझ उजले नगीने की।

भरे हैं जो बारूद से हर वक़्त बेशुमार
देते हैं नसीहत वो सभी को सकीने की।

कुछ अनुमोदित साहित्यिक पुस्तकें-

1) **Love story of a Yogi- what Patanjali says**

2) **Kundalini demystified- what Premyogi vajra says**

3) **कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान**

4) **Kundalini science- a spiritual psychology**

5) **The art of self publishing and website creation**

6) **स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला**

7) **बहुतकनीकी जैविक खेती एवं वर्षाजल संग्रहण के मूलभूत आधारस्तम्भ- एक खुशहाल एवं विकासशील गाँव की कहानी, एक पर्यावरणप्रेमी योगी की जुबानी**

8) **ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वैबसाईट**

9) **My kundalini website on e-reader**

10) **शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)**

11) **श्रीकृष्णाज्ञाभिनन्दनम**

12) **सोलन की सर्वहित साधना**

13) **योगोपनिषदों में राजयोग**

14) **क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव**

15) **देवभूमि सोलन**

16) **मौलिक व्यक्तित्व के प्रेरक सूत्र**

17) **बघाटेश्वरी माँ शूलिनी**

18) **म्हारा बघाट**

19) **कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है**

इन उपरोक्त पुस्तकों का वर्णन एमाजोन, ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट https://demystifyingkundalini.com/shop/ के वैबपेज "शॉप (लाईब्रेरी)" पर भी उपलब्ध है। साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में बने रहने के लिए कृपया इस वैबसाईट,https://demystifyingkundalini.com/ को निःशुल्क रूप में फोलो करें/इसकी सदस्यता लें।

सर्वत्रमेव शुभमस्तु।